30.4.2020

Dr. Purnima Singh
Department of Political Science
B.A. Ist year. Paper II
Indian Political Thought
Topic - Jay Prakash Narayan
Lecture - 23

जयप्रकाश नारायण का जन्म 1902 में हुआ था। उन्होंने गांधीवादी असहयोगी तथा भगवद्गीता के दर्शन के अनुयायी के रूप में अपना जीवन आरम्भ किया। जब वे अमेरिका में विद्याध्ययन कर रहे थे, उसी समय पूर्वी यूरोप के बुद्धिजीवियों से उनका सम्पर्क हुआ और फलस्वरूप वे मार्क्सवादी बन गये। उन पर एम॰ एन॰ राय की तीक्ष्ण रचनाओं का भी प्रभाव पड़ा, किन्तु मार्क्सवादी होने पर भी वे रूसी क्रान्ति के समर्थक नहीं थे। रूस की बोल्शेविक पार्टी ने जो क्रूर कृत्य किये थे उससे उनकी नैतिक चेतना को भारी आघात पहुँचा था। चतुर्थ दशक में उन्होंने साम्यवादियों के साथ संयुक्त जन मोर्चे का समर्थन किया था, किन्तु 1940 में उन्होंने साम्यवादियों के साथ संयुक्त मोर्चे की भर्त्सना की, और तब से वे साम्यवाद के सत्तावादी कठोर नियन्त्रण के प्रमुख आलोचक बने रहे।

जयप्रकाश नारायण भारतीय समाजवाद के प्रमुख नेता, प्रचारक तथा प्रवक्ता रहे। उन्होंने 1934 में भारतीय कांग्रेस समाजवादी दल की स्थापना में अभिक्रम किया था, और दल तथा उसके कार्यक्रम को लोकप्रिय बनाने के काम में अद्भुत प्रतिभा का परिचय दिया था।

जयप्रकाश नारायण एक महान राष्ट्रीय संघर्षकर्ता रहे हैं। 1942 के क्रान्तिकारी आन्दोलन

में उन्होंने वांछित ख्याति प्राप्त कर ली। वे हजारीबाग केन्द्रीय कारागार से भाग निकले और स्वाधीनता संग्राम का संगठन किया। किन्तु वे पुनः गिरफ्तार कर लिये गए और जेल में डाल दिये गये। अप्रैल 1946 में उन्हें मुक्त कर दिया गया। 1946 में गांधीजी ने कांग्रेस की अध्यक्षता के लिए उनका नाम प्रस्तावित किया किन्तु कांग्रेस की कार्यकारिणी ने उसे स्वीकार नहीं किया। उन्होंने कैबिनेट मिशन योजना का विरोध किया, क्योंकि 1946 में कांग्रेस समाजवादी दल जन-क्रान्ति की बात सोच रहा था। उन्होंने भविष्यवाणी की कि यदि इंगलैण्ड की सरकार ने भारतीय संविधान सभा द्वारा निर्मित संविधान को स्वीकार नहीं किया तो जनक्रान्ति उमड़ पड़ेगी।

1953 में जवाहरलाल नेहरू तथा जयप्रकाश नारायण के बीच इस समस्या पर बातचीत हुई कि राष्ट्रीय पुनर्निर्माण तथा विकास के क्षेत्र में कांग्रेस तथा प्रजा समाजवादी दल के बीच सहयोग किस प्रकार स्थापित किया जाये। किन्तु बैतूल के सम्मेलन में समाजवादी नेताओं ने बातचीत को अस्वीकार कर दिया।

गाँधीजी की मृत्यु के उपरान्त जयप्रकाश नारायण के राजनीतिक व्यक्तित्व में गहरा रूपान्तर हो गया। उन्हें संस्थागत तथा बाह्य परिवर्तनों की उपादेयता में सन्देह होने लगा और वे आभ्यन्तरिक परिवर्तन के उस सिद्धान्त को मानने लगे जिस पर गांधीजी ने बल दिया था। 1954 में उन्होंने प्रसोपा की राष्ट्रीय कार्यकारिणी से त्यागपत्र दे दिया और आगे चलकर दलगत राजनीति से अपना सम्बन्ध विच्छिन्न कर लिया।

Teacher's Signature

1954 में उन्होंने अपने को एक जीवनदानी के रूप में सर्वोदय आन्दोलन के रूप में सिर समर्पित कर दिया। वे निर्दलीय संगठन के पक्षधर थे जो 1947 में जनतन्त्र समाज के रूप में साकार हुआ।

जयप्रकाश नारायण के राजनीतिक विचार — समाजवाद

एक समाजवादी मनीषी के रूप में जयप्रकाश नारायण की शक्ति इस बात में थी कि उन्हें राजनीति के आर्थिक आधारों का स्पष्ट ज्ञान था। महात्मा गाँधी उन्हें समाजवाद का सबसे बड़ा भारतीय विद्वान मानते थे। ऐसा प्रतीत होता है कि उन पर ब्रिटेन तथा अमेरिका के समाजवादी विचारों का प्रभाव पड़ा है। वे समाजवाद को सामाजिक – आर्थिक पुनर्निर्माण का एक सम्पूर्ण सिद्धान्त मानते थे। उनके अनुसार यह वैयक्तिक आचारनीति के सिद्धान्त से भी बहुत बड़ी चीज है। उन्होंने मनुष्य की जैविक असमानता के सिद्धान्त का खण्डन किया। कोई भी समझदार व्यक्ति इस बात का समर्थन नहीं करेगा कि सब मनुष्य अपनी अन्तर्निहित क्षमताओं में समान है। समाजवाद व्यापक नियोजन का सिद्धान्त तथा कार्यप्रणाली है। उसमें समाज के समग्र पहलुओं के क्रान्तिक पुनर्निर्माण की धारणा निहित है। उसका उद्देश्य सम्पूर्ण समाज का सामंजस्यपूर्ण तथा सुसन्तुलित विकास है।

समाजवाद की स्थापना उत्पादन के साधनों का समाजीकरण करके ही की जा सकती है। समाजवाद ही विशाल जनसमुदाय के आर्थिक शोषण की क्रूर प्रक्रिया का अन्त कर सकता है।

Teacher's Signature

जयप्रकाश नारायण के अनुसार समाजवाद उन प्रमुख मूल्यों के विरुद्ध नहीं है जिनका भारतीय संस्कृति ने पोषण किया। वस्तुओं का मिल-बाँटकर उपयोग करना भारतीय संस्कृति का प्रमुख आदर्श रहा है, इसलिए यह आरोप उपहासास्पद है कि समाजवाद का सिद्धान्त पश्चिम से लिया गया है। इसमें सन्देह नहीं कि समाजवाद के व्यवस्थित आर्थिक सिद्धान्तों का निरूपण पश्चिम में हुआ किन्तु उसका मूल आदर्शवाद भारतीय संस्कृति का भी अंग है।

समाजवादी होने के नाते जयप्रकाश नारायण आर्थिक समस्याओं को प्राथमिकता देते थे। इसलिए उनका आग्रह था कि देश की आर्थिक समस्याओं को तुरन्त हल किया जाय।

लोकतन्त्र और जयप्रकाश नारायण

जयप्रकाश नारायण ने वर्तमान लोकतन्त्र और उसकी राजनीति की आलोचना करते हुए कहा था कि " आज की राजनीति में विश्रृंखलता बढ़ती जा रही है। दल के आदर्शों के विस्तार की अपेक्षा उसका स्वार्थपूर्ण दृष्टिकोण, आदर्शों का अवमूल्यन, व्यक्तिगत तथा विशेष हितों के लिए दल-बदल का परिवर्तन, विधायकों का क्रय-विक्रय दल की आन्तरिक अनुशासनहीनता, दलों के बीच अवसरवादी मित्रता तथा सरकार की अस्थिरता आदि आज के विचारणीय विषय बन गये हैं। उनका यह कथन आज के समय के लिए न केवल उपयुक्त बल्कि पूर्णतः सत्य है। लोकतन्त्र की समस्या मूलतः एक नैतिक समस्या है।

PAGE :
DATE : / /

जब तक जनता मे नैतिक मूल्यो और आध्यात्मिक गुणो का समुचित विकास नही हो जाता तब तक लोकतन्त्र वांछित परिणाम नही दे सकता। लोकतन्त्र का सफल संचालन तभी सम्भव है जब देश के नागरिक सत्यप्रिय हो, अहिंसावादी हो, स्वतन्त्रता प्रेमी हो, दमन का प्रतिरोध करने की उनमे क्षमता हो, वे सहयोग और सहअस्तित्व मे पूरा विश्वास रखते हो, उनमे दूसरो को सुनने, समझने तथा सहन करने की क्षमता हो, वे कर्तव्यपरायण हो, उत्तरदायी हो, और सीधा सरल जीवन व्यतीत करने मे विश्वास रखते हो।

आधुनिक संसदीय पद्धति के वे समर्थक नही थे। संसदीय प्रणाली दलगत राजनीति पर कार्य करती है और अनुभव यह बताता है कि आज के व्यापक निर्वाचनो मे, जिनमे शक्तिशाली केन्द्र-नियन्त्रित दलो द्वारा प्रचुर धन और कपटपूर्ण साधनो से गोलमाल की जाती है, मतदाता की अपेक्षा दलो और प्रचार प्रचार साधनो के पीछे निहित शक्ति तथा हितो का प्रतिनिधित्व होता है।

जयप्रकाश नारायण ने लोकतन्त्र मे राजनीतिक दलो की भूमिका के सम्बन्ध मे भी अपने विचार व्यक्त किये है। यह दलगत राजनीति जनता के नैतिक चरित्र को गिराती है और उसे स्वतन्त्र मनन, विचार और अभिव्यक्ति का वातावरण प्रदान नही करती। राजनीति दल और उनकी कार्यपद्धति के आगे जनता असहाय हो जाती है। वे दल-निरपेक्ष लोकतन्त्र के समर्थक थे।

जयप्रकाश नारायण निर्दलीय लोकतन्त्र के समर्थक थे। वास्तव मे 1954 से ही जयप्रकाश

Teacher's Signature

नारायण दलीय राजनीति से सर्वथा विमुख रहे है।

निष्कर्ष

जयप्रकाश बाबू का मूल्यांकन करते हुए डॉ. वर्मा ने लिखा है कि "जयप्रकाश नारायण भारतीय समाजवाद के क्षेत्र में माने हुए तथा सुविख्यात व्यक्ति है। यह उनका महत्वपूर्ण योगदान था कि उन्होंने भारत में समाजवादी आन्दोलन को कांग्रेस के झण्डे से नीचे चल रहे राष्ट्रीय स्वतन्त्रता - संग्राम के साथ सम्बद्ध कर दिया। नरेन्द्रदेव तथा जयप्रकाश नारायण ने समाजवादी विचारधारा को जनता की साम्राज्यवादी राजनीतिक आधिपत्य तथा देशीय सामन्तवाद की दासता से मुक्त करवाने की दिशा में मोड़ दिया। इस प्रकार उन्होंने समाजवादी दर्शन के दो युद्धों का समन्वय बनाया - राष्ट्रीय स्वतन्त्रता - संग्राम तथा सामाजिक क्रान्ति भारत के जर्जरित ग्रामीण समाज की विकराल दरिद्रता के सन्दर्भ में जयप्रकाश नारायण ने उन सामाजिक तथा यान्त्रिक बन्धनों के उन्मूलन पर बल दिया जो कृषि के उत्पादन में बाधा डाल रहे थे।

जयप्रकाश नारायण के समग्र क्रांति के लिये संघर्ष की भूमिका को महत्व दिया है। समग्र क्रांति को सफल बनाने के लिये नवीन विचारधारा की आवश्यकता है क्योंकि इसके लिये किया गया संघर्ष वर्ग-संघर्ष से भी अधिक विस्तृत होगा।